Library

School of Planning and Architecture, Bhopal

S.No.04 November,2021

नवदुनिया 21/09/2022 पेज क्र 07

अतीत और भविष्य के बीच कड़ी हैं संग्रहालय: डा. कवठेकर

विमर्श ● मानव संग्रहालय में लोक रुचि व्याख्यानमाला का आयोजन

भोपाल(नवदुनिया प्रतिनिधि)। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल द्वारा लोकरुचि व्याख्यानमाला के अंतर्गत मंगलवार को 'म्यूजियम्स प्लेस ट्रांसफार्मिंग टाइम टू नेरेटिव्स आफ पास्ट' विषय पर आयोजित व्याख्यान को स्कूल आफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (एसपीए) के संरक्षण विभाग विभागाध्यक्ष डा. विशाखा कवठेकर ने संबोधित करते हुए कहा कि संग्रहालय मानव जाति की गाथा से लोगों को शिक्षित कर रहे हैं। उन्होंने लंबे अकादमिक कार्य अनुभव और संचार माध्यमों के द्वारा प्रेषित तथ्यों का उदहारण देते हुए बताया कि कैसे संग्रहालय अतीत और भविष्य के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में कोविड से उपजी समस्याओं से प्राप्त अनुभव को ध्यान में रखते हुए संग्रहालयों को अपनी पारंपरिक भूमिका से आगे बढ़कर कई परिवर्तन कर, एलईडी वाल जैसे बड़े तकनीकी उपकरणों का उपयोग कर संग्रहालयों को आधुनिक बनाने की जरूरत आन पड़ी। हमें संग्रहालयों में प्रदर्शित कलाकृतियों की कई तरह से व्याख्या करना चाहिए। साथ ही संग्रहालयों को बहुविषयक अनुसंधान को बढ़ावा देना चाहिए। संग्रहालयों को अतीत के सौंदर्यात्मक और दार्शनिक पहलुओं का शोध करके उसके विभिन्न पक्षों को उद्घाटित करना चाहिए, ताकि भविष्य के लिए इन सभी पक्षों को संरक्षित एवं सुरक्षित रखकर आने वाली पीढ़ी के लिए ज्ञान का भंडार उपलब्ध कराया जा सके, तभी हम राष्ट्र निर्माण और अपने अतीत को फिर से लिखने में योगदान देंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संग्रहालय के निदेशक डा. पीके मिश्र ने कहा कि लिविंग कल्चर का प्रलेखन एवं म्यूजेमाइजेशन जरूरी है। संस्कृतियों के विकास को तिथि एवं कालक्रम के बिना समझा नहीं जा सकता है, वर्नाकुलर आर्किटेक्टचर स्थानीय परिवेश से ही बनता है। वर्तमान में इंटरनेट मिडिया ने हम सभी की क्रिएटिविटी खत्म कर दी है पर इसका सार्थक उपयोग कर मानव संग्रहालय ने कोविड के दौरान अपने दर्शकों को अपनी गतिविधियों से जोड़कर मानसिक रूप से व्यस्त रखा। आसपास के समुदाय को संग्रहालय से जोड़ने से संग्रहालय सामर्थ्यवान बनता है।

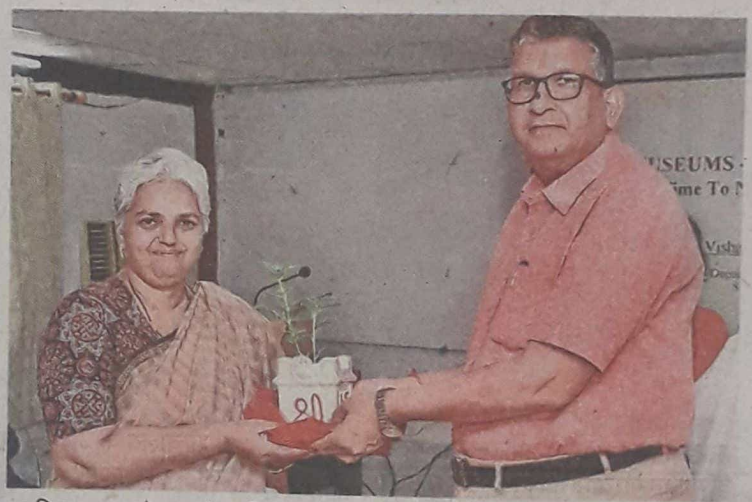

डा. विशाखा कवठेकर को स्मृति चिह्न भेंट करते डा. पीके मिश्र। ● सौजन्य- संग्रहालय